प्र० कारक से क्या समझते हैं? कारक के कितने भेद हैं; उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उ० → कारक की परिभाषा:

आचार्य हेमचन्द्र कृत 'प्राकृत व्याकरण' के अनुसार क्रिया की परिभाषा इस प्रकार है:—

'क्रिया हेतु कारकम्' अर्थात् जो क्रिया की उत्पत्ति में सहायक हो, उसे कारक कहते हैं। जैसे- रामो खेलइ। इसमें 'खेलइ' क्रिया में 'राम' सहायक है। इसलिए 'रामो' यहाँ कारक है।

कारक के भेद:

प्राकृत-व्याकरण के अनुसार कारक के निम्न छह भेद हैं:—

(1) कर्त्ता कारक (2) कर्म कारक (3) करण कारक (4) सम्प्रदान कारक (5) आपादान कारक (6) अधिकरण कारक

(1) कर्त्ता कारक:

जो क्रिया का प्रधान सम्प्रदायक कर्त्ता हो, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं। जैसे - रामो गच्छइ। यहाँ 'गच्छइ' क्रिया का प्रधान कर्त्ता 'रामो' है। अतः 'रामो' कर्त्ता कारक है। इसमें प्रथमा विभक्ति के वचन में 'ओ' और बहुवचन में 'आ' का प्रयोग होता है।

(2) कर्म कारक:

क्रिया के व्यापार का फलसूचित करने वाली संज्ञा के रूप को, कर्म कारक कहते हैं। जैसे: रामो पयेण ओयणं भुंजइ। (राम दूध से चावल खाता है)। यहाँ पर खाना क्रिया के व्यापार का फल 'ओयणं' इसमें द्वितीय विभक्ति के एक वचन में अम् (ं) और बहुवचन में 'आ' विभक्ति का प्रयोग होता है।

(3) करण कारक:

जो क्रिया की सिद्धि में कर्त्ता के लिए सबसे अधिक सहायक हो, उसे करण कारक कहते हैं। जैसे: कण्हेण वाणेण हओ कंसो। (कृष्ण ने वाण के द्वारा कंस को मारा)

Scanned by CamScanner

प्रस्तुत उदाहरण में कर्त्ता (के लिए) कृष्ण ने वाण के द्वारा कंस को मारा। इसमें कृष्ण ने कंस को मारने में सबसे अधिक सहायता वाण से ली। यद्यपि कंसवध में कृष्ण के हाथ और धनुष दोनों सहायक हैं। किन्तु, वे प्रमुख नहीं हैं। इसमें प्रमुख वाण है। इसलिए वाण में तृतीय विभक्ति के एक वचन का प्रयोग हुआ है। तृतीया विभक्ति के एक वचन में 'एण' और बहुवचन में 'एहि' का प्रयोग होता है।

(4) सम्प्रदान कारक:

किसी के लिए क्रिया की जाए या वस्तु के दान देने के कारण कर्त्ता जिसे संतुष्ट करता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे- सो विप्पाय विप्पस्स वा गावं देइ। (वह ब्राह्मण के लिए गाय दान में देता है)। यहाँ पर कर्त्ता दान स्वरूप ब्राह्मण को दान देने के कारण संतुष्ट होने से, विप्र में चतुर्थी एक वचन 'स्स' का प्रयोग हुआ है।

इसके चतुर्थी विभक्ति के एक वचन में 'स्स' और बहुवचन में 'आण' का प्रयोग होता है।

(5) आपादान कारक:

जिससे अलगाव (बिछड़ने) का भाव प्रकट हो, उसे आपादान कारक कहते हैं। जैसे- धावतो अस्सत्तो पडइ। (दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है)। यहाँ पर घोड़सवार का घोड़े से गिरने के कारण अलगाव हुआ है। इसलिए अश्व में पंचमी विभक्ति एक वचन 'तो' का प्रयोग किया गया है। इसमें पंचमी विभक्ति के एक वचन में 'तो' और बहुवचन में 'आहिंतो' का प्रयोग होता है।

(6) अधिकरण कारक:

जो किसी भी क्रिया का आधार हो, उसे अधिकरण कहते हैं।

(क) मोक्खे सुहं अत्थि। (मोक्ष में सुख है)

(ख) तिलेसु तेलं संति (तिलों में तेल है)।

यहाँ पर सुख का आधार मोक्ष और तिल का आधार 'तिल' होने के कारण 'तिल' में सप्तमी विभक्ति के एक वचन में 'ए' म्मि और बहुवचन में सु का प्रयोग होता है।

Scanned by CamScanner

नोट :→ इस प्रकार सम्बन्ध कारक की विभक्ति चतुर्थी के समान एवम् सम्बोधन कारक की विभक्ति प्रथमा विभक्ति के समान हैं। इसलिए इन दोनों का पृथक् कथन नहीं किया गया है। इसलिए मुख्यतः कारक के छह ही भेद माने गये हैं।

Scanned by CamScanner